सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, बिहार

प्रेस विज्ञप्ति

संख्या– **324**
17/04/2017

चम्पारण–सत्याग्रह–शताब्दी–वर्ष के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय स्वतंत्रता–सेनानी सम्मान समारोह में महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द के संबोधन का सारांश

पटना, 17 अप्रील 2017 ::–चम्पारण–सत्याग्रह–शताब्दी–वर्ष के अवसर पर आयोजित अखिल भारतीय स्वतंत्रता–सेनानी सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए बिहार के महामहिम राज्यपाल श्री राम नाथ कोविन्द ने कहा कि गाँधीजी का 'चम्पारण–सत्याग्रह' भारतीय स्वतंत्रता–आंदोलन में 'गाँधी युग' की शुरूआत माना जाता है। बिहार में चम्पारण जिले को ही यह सौभाग्य प्राप्त है कि दक्षिण अफ्रीका से वापस आकर महात्मा गाँधी ने सर्वप्रथम 'सत्याग्रह–आंदोलन' का बिगुल यहीं फूंका। मोहनदास करमचन्द गाँधी जी को 'महात्मा' बनानेवाली बिहार की चम्पारण की ही पवित्र भूमि है।

राज्यपाल ने कहा कि आज के ठीक सौ साल पहले गाँधीजी द्वारा 1917 ई॰ में संचालित 'चंपारण सत्याग्रह आन्दोलन' न सिर्फ भारतीय इतिहास, बल्कि विश्व इतिहास की एक ऐसी घटना है, जिसने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को खुली चुनौती दी थी। गाँधीजी 10 अप्रैल, 1917 को जब बिहार आए, तो उनका एक मात्र मकसद चंपारण के किसानों की समस्याओं को समझना, उनका निदान करना और नील के धब्बों को मिटाना था। एक स्थानीय पीड़ित किसान श्री राजकुमार शुक्ल ने कांग्रेस के 'लखनऊ अधिवेशन' में अंग्रेजों द्वारा जबरन नील की खेती कराये जाने के संदर्भ में गाँधीजी से शिकायत की थी। शुक्ल जी का आग्रह था कि गाँधीजी इस आंदोलन का नेतृत्व करें। 'चम्पारण आन्दोलन' भारत के स्वतंत्रता–संग्राम का एक अद्वितीय अध्याय रहा है। इतिहासकार इसे जंगे–आजादी के इतिहास में 'मील का पत्थर' बताते हैं।

श्री कोविन्द ने कहा कि अपनी 'आत्मकथा' में गाँधीजी ने लिखा है कि–''यह अक्षरशः सत्य है कि मैंने चम्पारण में ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया। जब मैं इस साक्षात्कार के अपने अधिकार की जाँच करता हूँ तो मुझे वहाँ के लोगों के प्रति अपने प्रेम के सिवा कुछ भी नही मिलता। चम्पारण के वे दिन मेरे जीवन में कभी न भूलने जैसे हैं। मेरे लिए और किसानों के लिए ये उत्सव के दिन थे।'' राज्यपाल ने कहा कि गाँधीजी ने स्वयं लिखा है कि ''चम्पारण सत्याग्रह से पहले भारत में मुझे कौन जानता था? अफ्रीका में 20 वर्ष बिताने के बाद मैं भारत लौटा और चम्पारण आया। इसके बाद मेरे साथ पूरा देश जग उठा। इससे पहले मैं चम्पारण को नहीं जानता था। परन्तु जब मैं चम्पारण आया तो मुझे लगा कि मैं बिहार के लोगों को सदियों से जानता हूँ और वे भी मुझे गहराई से जानते हैं। यह बिहार है, जिसने पूरे भारतवर्ष को गाँधी का परिचय दिया।'' श्री कोविन्द ने कहा कि गाँधीजी के इन शब्दों से 'चम्पारण–सत्याग्रह' की महत्ता स्वतः प्रमाणित हो जाती है।

राज्यपाल ने 'चम्पारण–सत्याग्रह' के शताब्दी वर्ष को व्यापक रूप से आयोजित करने के लिए राज्य सरकार की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि आज पूरे देश भर से स्वतंत्रता–सेनानियों को सादर आमंत्रित कर उन्हें सम्मानित किया जाना हम सबके लिए सौभाग्य और गौरव की बात है। राज्यपाल ने राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी का स्वागत करते हुए बिहार–यात्रा के लिए उनके प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि बिहारवासियों के प्रति राष्ट्रपति के हृदय में बराबर स्नेह का भाव रहता है।

.....